आदर्श महिला महाविद्यालय,भिवानी की मासिक पत्रिका

अनुपमा यात्रा

वर्षः 02/ संस्करणः 08/ पृष्ठः 08/ मूल्यः 5 रूपये | भिवानी, रविवार 10 अगस्त 2025 | anupama.express@ammb.ac.in

नए सत्र के आरंभ में उल्लास और उमंग से महाविद्यालय हुआ गुलजार

नया शैक्षणिक सत्र विद्यार्थियों के जीवन में एक नई शुरुआत, नई उमंग और नई ऊर्जा लेकर आता है। इसी क्रम में जब प्रथम वर्ष की छात्राएं अपने सपनों को लेकर महाविद्यालय पहुंचीं, तो परिसर एक विशेष उल्लास और जीवंतता से भर गया।

पहली बार कॉलेज की दहलीज पर कदम रखते ही छात्राओं के चेहरों पर एक अलग ही चमक देखने को मिली। कुछ के चेहरे पर उत्साह था, तो कुछ के मन में भविष्य को लेकर आशाएं और जिज्ञासाएं। आधुनिक परिधान, बैग में किताबें और मन में नए सपनों को संजोए छात्राओं ने महाविद्यालय को एक बार फिर चहकने पर मजबूर कर दिया। महाविद्यालय प्रशासन और वरिष्ठ छात्राओं द्वारा नवागंतुक छात्राओं का आत्मीय स्वागत किया गया। विभिन्न विभागों में ओरिएंटेशन सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को महाविद्यालय की कार्यप्रणाली, पाठ्यक्रम, पुस्तकालय, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों आदि की जानकारी दी गई। इससे उन्हें वातावरण से परिचित होने में मदद मिली।

पहला दिन न केवल शिक्षा की शुरुआत थी, बल्कि यह आपसी संवाद और संबंधों की भी शुरुआत थी। छात्राओं ने अपने जैसे अन्य नवागंतुकों से मुलाकात की, दोस्ती की शुरुआत की और एक नई पहचान के निर्माण की ओर पहला कदम बढ़ाया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ अलका मित्तल ने बताया कि महाविद्यालय केवल शैक्षणिक केंद्र नहीं है, यह छात्राओं को आत्मनिर्भर, जागरूक और आत्मविश्वासी बनाने का भी माध्यम है। नए सत्र की यह शुरुआत न केवल ज्ञान की दिशा में बल्कि उनके व्यक्तित्व निर्माण की ओर एक निर्णायक कदम होगा।

नया सत्र, नया उत्साह और नई उमंगें लेकर आया है। प्रथम वर्ष की छात्राओं की चहचहाहट और सकारात्मक ऊर्जा ने महाविद्यालय परिसर को फिर से जीवंत बना दिया है। यह सत्र न केवल उन्हें ज्ञान देगा, बल्कि उन्हें एक बेहतर इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में भी मार्गदर्शन करेगा।

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया आरंभ

आदर्श महिला महाविद्यालय जो कि एक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है। शैक्षणिक सत्र 2025-26 हेतु स्नातकोत्तर (पीजी) कक्षाओं में प्रवेश प्रक्रिया औपचारिक रूप से आरंभ कर दी गई है।

इन विषयों में अध्ययन हेतु महाविद्यालय में योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों की टीम, उन्नत शिक्षण संसाधन, प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय तथा डिजिटल अधिगम की समुचित सुविधाएं उपलब्ध हैं। प्रवेश प्रक्रिया पूर्णतः पारदर्शी एवं योग्यता आधारित है। इच्छुक छात्राएं निर्धारित तिथि तक ऑनलाइन माध्यम से आवेदन प्रस्तुत कर सकती हैं। दाखिला संबंधी किसी भी जानकारी हेतु महाविद्यालय में हेल्प डेस्क की व्यवस्था की गई है, जहाँ पर छात्राएं मार्गदर्शन प्राप्त कर सकती हैं। प्रवेश प्रपत्र महाविद्यालय कार्यालय से कार्यदिवसों में प्राप्त किए जा सकते है।

महाविद्यालय में निम्नलिखित विषयों में स्नातकोत्तर स्तरीय शिक्षा प्रदान की जा रही है :

कोर्स	कुल सीट	रिक्त सीट
1. वाणिज्य (M.Com)	40	32
2. अंग्रेज़ी (M.A. English)	40	24
3. गणित (M.Sc. Mathematics)	80	64
4. राजनीतिक विज्ञान (M.A. Political Science)	40	31
5. इतिहास (M.A. History)-	40	24
6. रसायन विज्ञान (M.Sc. Chemistry)	40	33
7. भौतिक विज्ञान (M.Sc. Physics)	40	37

स्नातक प्रथम वर्ष के लिए 28 अगस्त तक पुनः खोला गया पोर्टल

यूजी प्रथम वर्ष में प्रवेश से अब तक वंचित विद्यार्थियों के लिए अच्छी खबर है। जो विद्यार्थी किसी कारणवश से आवेदन नहीं कर पाए थे वे यूजी प्रथम वर्ष प्रवेश पोर्टल 2025-26 को फिर से खोलने के बाद अब आवेदन कर सकेंगे। बता दें कि कई कॉलेजों में यूजी प्रथम वर्ष की अनेक सीटें अभी भी खाली रह गई है जिसके चलते कॉलेजों व विद्यार्थियों की मांग पर उच्चतर शिक्षा विभाग ने एक बार फिर से ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन पोर्टल ओपन कर दिया है। अब विद्यार्थी 28 अगस्त तक नए रजिस्ट्रेशन करा सकेंगे। इस संबंध में डीएचई ने हरियाणा के सभी सरकारी कॉलेजों के प्रधानाचार्य, सरकारी, सहायता प्राप्त निजी कॉलेजों के प्रधानाचार्य और सभी स्ववित्तपोषित कॉलेजों बी के प्रधानाचार्य को यूजी प्रथम वर्ष प्रवेश पोर्टल 2025-26 बी को पुनः खोलने के संबंध में पत्र जारी कर अवगत करवाया है। इससे पहले यूजी प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के बी लिए दो मेरिट लिस्ट जारी की गई जिसके बाद तीसरे चरण में रिक्त सीटों पर फिजिकल काउंसलिंग की गई जिसे रिक्त सीटों के लिए 24 जुलाई तक जारी रखा गया था। अब एक बार फिर से आवेदन के इच्छुक छात्रों के लिए प्रवेश हेतु अवसर प्रदान किया गया है।

कोर्स	रिक्त सीट
बीए एडिड	174
बीए एसएफएस	34
बीएससी लाइफ साइंस एसएफएस	23
बीएससी फिजिकल साइंस एसएफएस	118
बीसीए एसएफएस	20
बीकॉम एसएफएस	97

सी.बी.एल.यू. विशेषज्ञो की टीम ने महाविद्यालय का किया मूल्यांकन, प्रयोगशालाओं की सराहना

चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों की टीम ने महाविद्यालय का औपचारिक मूल्यांकन किया। इस दौरान टीम ने महाविद्यालय की शैक्षणिक एवं भौतिक सुविधाओं का निरीक्षण करते हुए इसकी प्रशंसा की। विशेषज्ञों ने केमिस्ट्री लैब, फिजिक्स लैब, कंप्यूटर लैब ,पुस्तकालय एवं मैथ्स लैब को अत्याधुनिक सुविधाओं एवं उत्कृष्ट संचालन के लिए सराहा। टीम ने कहा कि इन प्रयोगशालाओं में छात्राओ के प्रायोगिक ज्ञान को सुदृढ़ करने हेतु सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध हैं, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति महाविद्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस मूल्यांकन के दौरान विशेषज्ञों ने महाविद्यालय की समग्र व्यवस्था, शिक्षण पद्धति और विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध संसाधनों की भी सराहना की।

विश्व संस्कृत दिवस पर 'संस्कृत पर्व' का आयोजन

आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी के संस्कृत विभाग द्वारा विश्व संस्कृत दिवस की पूर्व संध्या पर 'संस्कृत पर्व' नामक विशेष कार्यक्रम का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में संस्कृत भाषा तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रति अभिरुचि एवं जागरूकता का संवर्धन करना था। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. सुमन ने की तथा संपूर्ण आयोजन प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या महोदया द्वारा माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। तत्पश्चात छात्राओं ने वैदिक मंत्रोच्चारण,'संस्कृत दिवसः गीतिका', श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोक, 'शिव तांडव स्तोत्र', 'रुद्राष्टकम्', 'विष्णु स्तुति', 'संस्कृत देशभक्ति गीत', 'दुर्गा स्तुति', महर्षि पाणिनि लघु कथा एवं नीति-श्लोकों का सस्वर पाठ कर सम्पूर्ण वातावरण को आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक भावनाओं से ओत-प्रोत कर दिया।

कुमारी देवांशी ने 'अग्नि सूक्त' के वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर परिसर को वैदिक ऊर्जा से आच्छादित कर दिया।। कुमारी तमन्ना एवं कुमारी मुस्कान ने सामूहिक रूप से ÷भारत गीता बुध जन गीता÷ शीर्षक संस्कृत गीत प्रस्तुत कर भारतवर्ष की महिमा का गुणगान किया। इस अवसर पर कुमारी आरती ने अपनी हास्य-कला से सभी को प्रफुल्लित किया । कुमारी अक्षिता द्वारा प्रस्तुत 'शिव तांडव स्तोत्र' एवं कुमारी रूपाली द्वारा प्रस्तुत 'रुद्राष्टकम्' ने वातावरण को पूर्णतः शिवमय बना दिया। कुमारी स्नेहा ने संस्कृत भाषा के महत्व पर काव्यात्मक प्रस्तुति देकर इसे जीवन में आत्मसात करने का संदेश दिया। कुमारी प्राची की 'दुर्गा स्तुति' ने छात्राओं में आत्मबल एवं आत्मविश्वास का संचार किया। कुमारी प्रीति ने 'वंदे मातरम्' गीत एवं कुमारी सुनिधि ने नीति-श्लोकों की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को राष्ट्रभक्ति और जीवनोपयोगी शिक्षाओं से अवगत कराया।

कुमारी दीक्षा ने कालिदास की महिमा का प्रभावशाली वर्णन कर अपनी साहित्यिक प्रतिभा एवं संस्कृत-प्रेम का परिचय दिया। कुमारी सोनिका ने श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का भावपूर्ण पाठ कर श्रोताओं को आत्मविभोर कर दिया। कुमारी महक ने संस्कृत भाषा के गौरव को उजागर करती गीतिका प्रस्तुत की। कुमारी कोमल ने 'संस्कृत दिवस' के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसकी सांस्कृतिक एवं भाषिक गरिमा से परिचित कराया। कुमारी शिवांगी ने महर्षि पाणिनि के जीवन पर आधारित लघुकथा के माध्यम से संस्कृत व्याकरण में उनके योगदान की जानकारी दी। प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि संस्कृत केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर ही नहीं, अपितु विश्व की प्राचीनतम वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है, जिस पर नासा जैसे संस्थानों में भी अनुसंधान हो रहा है। उन्होंने छात्राओं से संस्कृत अध्ययन के प्रति आग्रह किया और इस प्रकार के आयोजनों में सहभागिता हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम के समापन पर संयोजिका डॉ. सुमन ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राध्यापिकाएँ – डॉ. अपर्णा बत्रा, डॉ. रेनू, डॉ. दीपू सैनी, डॉ. ममता चौधरी, डॉ. डिंपल, डॉ. मोनिका एवं अन्य अध्यापकगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन 'शांति पाठ' के साथ सम्पन्न हुआ।

महिलाओं की सुरक्षा: एक प्रश्नचिह्न?

डॉ. गायत्री बंसल

'नारी को शक्ति कहा गया है, पर क्या उसे सुरक्षित जीवन देने की शक्ति समाज में है?'

आज जब हम 21वीं सदी की प्रगति और तकनीकी क्रांति की बातें करते हैं, चांद पर पहुंचने, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में जीने का गर्व करते हैं, तब एक सवाल बार-बार सामने खड़ा हो जाता है - क्या हमारी बहन-बेटियां सुरक्षित हैं?

आधुनिकता के मुखौटे के पीछे छिपी संवेदनशीलता

नारी केवल देह नहीं, वह दिशा है समाज की

जब एक बेटी असुरक्षित महसूस करती है, तो सिर्फ एक परिवार नहीं, पूरी सभ्यता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। आज जरूरत है सोच बदलने की, नजर बदलने की। नारी को सुरक्षा नहीं, समानता और सम्मान की जरूरत है।

हमारा समाज आधुनिकता की ओर तो बढ़ा है, पर सोच आज भी रूढ़िवादी है। नारी को पूजा जाता है - देवी, लक्ष्मी, दुर्गा कहकर - पर वहीं नारी को सबसे अधिक पीड़ा उसी समाज से मिलती है।

छोटी बच्चियों के साथ हो रहे बलात्कार,
अपने ही पिता, भाई, चाचा जैसे रिश्तों से टूटता विश्वास,
सार्वजनिक स्थलों पर होती छेड़छाड़,

सोशल मीडिया पर साइबर क्राइम और ब्लैकमेलिंग -

ये सब सिर्फ अपराध नहीं, समाज की सामूहिक संवेदनहीनता के उदाहरण हैं।

आंकड़े चीख-चीख कर सच्चाई बयां करते हैं हर रोज देश में औसतन 80 से अधिक बलात्कार दर्ज होते हैं। और यह तो सिर्फ वे मामले हैं जो सामने आते हैं, जबकि हजारों मामले सामाजिक दबाव, डर, या बदनामी के डर से दबा दिए जाते हैं।

कविता की कुछ पंक्तियाँ इस लेख को समर्पित हैं

'जिसे देवी कहकर पूजते हैं तुम,
उसी को नजरों से क्यों तौलते हो तुम?
कब तक यूँ असुरक्षित रहेगी वो,
कब उठेगा तुम्हारा जमीर, ओ पुरुष तुम?'

कहाँ चूक रहे हैं हम?

1. **संस्कारों की कमी:** लड़कों को यह सिखाना जरूरी है कि नारी कोई वस्तु नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है।
2. **शिक्षा में संवेदना की कमी:** स्कूलों में नैतिक शिक्षा, लिंग संवेदनशीलता और संबंधों की गरिमा पर पर्याप्त जोर नहीं दिया जाता।
3. **कानून का डर नहीं:** न्याय प्रणाली की धीमी गति, लंबी तारीखें और सजा की अनिश्चितता अपराधियों को निर्भीक बना रही है।
4. **मीडिया और मनोरंजन में स्त्री की छवि :** कई फिल्मों, वेब सीरीज़ और गानों में महिलाओं को वस्तु की तरह प्रस्तुत करना समाज में गलत सोच को जन्म देता है।

क्या हो समाधान?

कड़े और त्वरित न्याय
महिलाओं पर अत्याचार के मामलों में फास्ट ट्रैक कोर्ट और सख्त सजा होनी चाहिए।

सामाजिक जागरूकता
हर माता-पिता, शिक्षक, और नागरिक की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे बच्चों को लिंग-सम्मान की शिक्षा दें।

महिलाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण
आत्मरक्षा सिर्फ शारीरिक नहीं, डिजिटल और मानसिक स्तर पर भी जरूरी है।

शालीन मीडिया और सशक्त स्त्री चरित्रों को बढ़ावा
समाज में वही आदर्श बनता है जो वह देखता है - इसलिए जरूरी है कि फिल्में, विज्ञापन, और सोशल मीडिया पर नारी की गरिमा बनाए रखी जाए।

महिलाओं की सुनिए

संयुक्त राष्ट्र की जनसंख्या संबंधी ताजा रिपोर्ट (UNFPA रिपोर्ट 2025) ने यूँ तो पूरी दुनिया में आबादी की बढ़ोतरी से जुड़े कई तरह के ट्रेंड पर रोशनी डाली है, लेकिन जो एक प्रवृत्ति सबसे प्रमुख और व्यापक रूप में उभरी, वह है जन्म दर में कमी। इसे रियल फर्टिलिटी क्राइसिस का नाम दिया जा रहा है। मगर इस बहस में जो पहलू पीछे छूट रहा है वह है प्रजनन संबंधी फैसलों में महिला स्वर की अनदेखी।

रिपोर्ट में यह तथ्य अच्छी तरह से सामने आया है कि न सिर्फ भारत बल्कि पूरी दुनिया में जन्म दर में तेज गिरावट देखने को मिल रही है। जो ग्लोबल फर्टिलिटी रेट 1960 में 5 था, वह 1990 में 3.3 और 2024 में 2.2 पर आ गया। भारत की कहानी भी इससे खास अलग नहीं है। यहां नेशनल फर्टिलिटी रेट 2005 में 2.9 था जो 2020 में 2.0 पर आ गया।

कड़वी हकीकत यह है कि बच्चों की संख्या में यह कमी भी अपने शरीर पर महिलाओं के अधिकार को लेकर बढ़ी हुई चेतना को रेखांकित नहीं करती। इसी रिपोर्ट के तहत UNFPA और Yougov ने 14 देशों के 14000 से ज्यादा वयस्कों के बीच एक सर्वे किया जिसमें यह बात सामने आई कि ज्यादातर लड़कियों के लिए अवांछित प्रेग्नेंसी से मुक्ति पाना मुश्किल होता है। यही नहीं, जब इच्छा हो तब बच्चे पाना भी उतना ही कठिन होता है। इसके पीछे आर्थिक और सामाजिक कारक तो होते ही हैं, करियर संबंधी अड़चनें भी कम नहीं होतीं। ज्यादातर जगहों पर प्रेगनेंसी करियर की उड़ान को बाधित करती है।

ज्यादती का एक रूप यह भी है कि जहां बच्चों की संख्या और उनके जन्म का समय चुनने में लड़कियों की भूमिका कम से कम होती है वहीं विभिन्न देशों में जन्म दर में कमी का ठीकरा प्रत्यक्ष या परोक्ष तौर पर उन्हीं के सिर फोड़ा जाता है।

आने वाली दुनिया कैसी होगी

अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने टैरिफ वॉर में पहले तो चीन को लेकर बेहद सख्ती दिखाई। जब शी चिनफिंग को उससे फर्क नहीं पड़ा और चीन ने हाल में सख्ती दिखाई तो ट्रंप को झुकना पड़ा। ट्रंप ने यह भी कहा था कि वह राष्ट्रपति बनने के 24 घंटे के अंदर यूक्रेन युद्ध को रुकवा देंगे। उन्होंने बेशक इस दिशा में पहल की, लेकिन रुकने के बजाय दोनों देशों के बीच युद्ध और तेज हो गया है। इधर, इस्राइल ने ईरान पर हमला कर एक और जंग की शुरुआत कर दी है। दुनिया में आज जो चल रहा है, वह बदली विश्व व्यवस्था का आईना है।

कमजोर अमेरिका दूसरे विश्व युद्ध के बाद अमेरिका और सोवियत संघ दो बड़े पावर सेंटर बनकर उभरे। फिर सोवियत संघ के विघटन के साथ युद्ध खत्म हुआ और अमेरिका एकध्रुवीय विश्व का लीडर बन गया। लेकिन आज उसे चीन से तगड़ी चुनौती मिल रही है।

निराश न हो। THE ONCE AND FUTURE WORLD ORDER: Why Global Civilization Will Survive the Decline of the West में अमिताव आचार्या लिखते हैं कि पश्चिम देशों के कमजोर पड़ने के बाद भी ग्लोबल सिविलाइजेशन का वजूद बचा रहेगा। वह अमेरिका में इंटरनेशनल रिलेशंस के प्रोफेसर हैं। उनके मुताबिक, आज दुनिया में जो आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संगठनों में गिरावट दिख रही है, उससे निराश होने की जरूरत नहीं है।

इतिहास देखिए.

आज की विश्व व्यवस्था पश्चिमी देशों की बनाई हुई है, जो औपनिवेशिक विजय की देन है। आचार्या लिखते हैं कि इससे इन देशों के अंदर एक तरह का अहंकार आ गया था। वे भूल गए थे कि दुनिया के अलग-अलग देशों (साम्राज्यों, रियासतों) के बीच सहयोग और शांति की व्यवस्था कई क्षेत्रों में पहले से मौजूद रही है। आचार्या सुमेर और प्राचीन इजिप्ट की मिसाल देते हैं। वह 5,000 वर्षों के विश्व इतिहास का हवाला देते हुए बताते हैं कि अलग-अलग संस्कृतियों में साम्राज्य, पावर पॉलिटिक्स और बौद्धिक विमर्श को लेकर थोड़े अलग लेकिन तुलनात्मक आइडिया पनपे। यह मॉडल पश्चिम के उभार की वजह से ध्वस्त हुआ।

भविष्य कैसा होगा

आचार्या यह दावा नहीं करते कि भविष्य की विश्व व्यवस्था इससे बहुत बेहतर होगी, लेकिन वह इतना मानते हैं कि पश्चिमी दबदबा न रहने से वे संघर्ष खत्म हो सकते हैं, जो इन देशों की देन हैं। वह उस सोच की भी आलोचना करते हैं, जिसमें तरक्की को यूनान-रोम से मिली पश्चिमी परंपरा के मानकों पर परखा जाता है। आचार्या इस संदर्भ में प्राचीन भारत, चीन, ईरान, मंगोल, लैटिन अमेरिका और इस्लामिक दुनिया की उपलब्धियों का जिक्र करते हैं। वह यह भी याद दिलाते हैं कि इनमें से कई संस्कृतियां पश्चिम की औपनिवेशिक नीतियों के कारण कमजोर पड़ीं।

मल्टिप्लेक्स ऑर्डर

आचार्या लिखते हैं कि आगे चलकर एक नया 'मल्टिप्लेक्स' ऑर्डर उभर सकता है, जिसका नेतृत्व रूस, भारत, चीन, यूरोप और अमेरिका कर सकते हैं। ये सभी इसे अपने हितों के मुताबिक ढालने की कोशिश करेंगे। इसका नतीजा क्या होगा, जवाब उनकी किताब नहीं देती।

शिक्षा का व्यवसायीकरण : एक चिंतन

अशोक बुवानीवाला
महासचिव, प्रबंध कार्यकारिणी समिति, आदर्श महिला महाविद्यालय

शिक्षा को समाजसेवा के रूप में पुनः स्थापित करें, और यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण एवं सुलभ शिक्षा प्राप्त हो।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की मूल आधारशिला होती है। यह जीवन पर्यंत चलने वाली एक निरंतर प्रक्रिया है, जो केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं, अपितु व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास में भी सहायक होती है। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान अर्जित करने का साधन नहीं है, बल्कि यह सोचने, समझने और जीवन को सही दिशा देने का माध्यम है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में शिक्षा को समानता, स्वतंत्रता और न्याय प्राप्त करने के सशक्त औजार के रूप में देखा गया है। किंतु वर्तमान समय में इसका स्वरूप तेजी से बदल रहा है यह सेवा से हटकर एक लाभ-केंद्रित व्यापार का रूप लेती जा रही है। जब शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान देने के बजाय लाभ अर्जित करना हो जाए, तब यही प्रवृत्ति शिक्षा के व्यवसायीकरण के रूप में सामने आती है।

देशभर में वर्तमान में लगभग 26.5 करोड़ विद्यार्थी स्कूली शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जो स्कूल-योग्य बच्चों की कुल संख्या का लगभग 74त्न हैं। इनमें लगभग 13.5 करोड़ बालक एवं 13 करोड़ बालिकाएं सम्मिलित हैं। देश में कुल विद्यालयों की संख्या लगभग 14 लाख है, जिनमें से लगभग 22.5त्न निजी विद्यालय हैं।

यदि प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में अंतर को कुछ समय के लिए नजरअंदाज भी कर दिया जाए, तो भी लगभग 7 करोड़ छात्र माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत हैं। यह संख्या एक विशाल ÷ग्राहक समूह÷ के रूप में कार्य करती है, जिससे कोचिंग व ट्यूशन उद्योग को पनपने का अवसर मिलता है।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाएं और प्रवेश परीक्षाएं इस उद्योग को एक नई ऊर्जा प्रदान करती हैं। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में 27प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 38त्न विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर ट्यूशन या कोचिंग का सहारा लेते हैं। पिछले 8-10 वर्षों में निजी ट्यूशन केंद्रों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। अनुमानों के अनुसार, वर्ष 2028 तक कोचिंग का बाजार 1.34 लाख करोड़ तक पहुंच सकता है।

इन आंकड़ों के बीच कई गंभीर प्रश्न उठते हैं। दुर्भाग्यवश, आज विद्यालय, जो जीवन निर्माण का केंद्र होते हैं, एक समृद्ध व्यवसाय का रूप ले चुके हैं। अच्छी शिक्षा अब केवल संपन्न वर्ग की धरोहर बनकर रह गई है। मध्यमवर्गीय एवं सामान्य परिवारों के लिए इन सुविधाओं तक पहुंच पाना एक सपना मात्र बन गया है।

स्थिति और भी चिंताजनक तब हो जाती है जब गांवों में भी इस व्यापारीकरण की प्रवृत्ति पांव पसारती है। हर गली-मोहल्ले में दो-चार किराए के कमरों में 'अंग्रेज़ी माध्यम' के नाम पर 'हिंग्लिश' माध्यम में शिक्षा दी जा रही है। सरकारी विद्यालयों में अब लगभग केवल आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चे ही अध्ययन करते हैं, क्योंकि निजी संस्थानों की फीस आमजन की पहुंच से बाहर है।

इतना ही नहीं, अब विद्यालय पुस्तकों और यूनिफॉर्म की अनिवार्य बिक्री का भी माध्यम बन चुके हैं। विद्यालय प्रबंधन अपने स्वजनों को इन वस्तुओं की आपूर्ति का ठेका सौंप देते हैं, जिससे शिक्षा के साथ-साथ अन्य माध्यमों से भी लाभ कमाया जा सके।

अब प्रश्न उठता है कि जब शिक्षा का व्यवसायीकरण इतनी तीव्र गति से फैल रहा है तो इसे रोका कैसे जाए?

सरकार को इस दिशा में ठोस एवं सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है। संविधान में निहित 'शिक्षा एक मौलिक अधिकार' का पालन अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जाना चाहिए। प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जानी चाहिए, और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कोई भी शिक्षा व्यवसायी आम जनता को गुमराह कर, उनसे अनुचित शुल्क न वसूल सके।

यह भी विचारणीय है कि जब सरकारी विद्यालयों में संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक, और निर्धारित पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, तब भी छात्र कोचिंग संस्थानों का रुख क्यों करते हैं? इन कोचिंग संस्थानों में ऐसी कौन-सी शिक्षण विधियाँ अपनाई जाती हैं जो सरकारी शिक्षा व्यवस्था में लागू नहीं हो पाती? शिक्षकों और पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता पर प्रश्नचिन्ह क्यों लगते हैं?

यह भी कटु सत्य है कि आजकल कोचिंग संस्थानों के भ्रामक विज्ञापन विद्यार्थियों और अभिभावकों पर मानसिक दबाव डालते हैं - '100प्रतिशत सफलता की गारंटी', 'रैंक 1 हमारी कोचिंग से' जैसे दावे न केवल भ्रामक हैं, बल्कि तनाव जनक भी।

ऑनलाइन शिक्षा ने भी शिक्षा को एक डिजिटल उत्पाद बना दिया है। यहाँ शिक्षा की पहुंच तो है, लेकिन उद्देश्य केवल लाभ अर्जन है। जब शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य ज्ञान नहीं, बल्कि मुनाफा हो, तब शिक्षा एक 'उत्पाद' बन जाती है और छात्र एक 'ग्राहक'।

यह सब मिलकर शिक्षा के व्यवसायीकरण को एक गंभीर सामाजिक चिंता का विषय बना देते हैं।

जब शिक्षा केवल लाभ कमाने का साधन बन जाती है, तब समाज में असमानता, शोषण और नैतिक पतन बढ़ते हैं। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि शिक्षा को पुनः एक सामाजिक सेवा के रूप में स्थापित किया जाए। सरकार, समाज और शिक्षण संस्थानों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि शिक्षा केवल सक्षम वर्ग की पहुंच तक सीमित न हो, बल्कि हर वर्ग के लिए सुलभ, समान और गुणवत्तापूर्ण हो। तभी एक सशक्त, समावेशी एवं विकसित भारत के निर्माण की कल्पना साकार हो सकेगी।

हमें यह समझना होगा कि शिक्षा कोई वस्तु नहीं है जिसे बेचा जाए - यह मानव विकास की आधारशिला है। इसे व्यवसाय नहीं, व्रत समझकर संचालित किया जाना चाहिए।

आधुनिक शिक्षा: कौशल आधारित शिक्षा प्रणाली

डॉ. अलका मित्तल
प्राचार्या आदर्श महिला महाविद्यालय

भारत सहित पूरी दुनिया में शिक्षा प्रणाली निरंतर परिवर्तनशील है। पहले जहां शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना था, वहीं आज इसका दायरा काफी विस्तृत हो चुका है। आज की शिक्षा न केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित है, बल्कि यह विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के लिए तैयार करने पर केंद्रित है। इसी दिशा में 'कौशल आधारित शिक्षा' का उदय हुआ है, जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुका है। कौशल आधारित शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य छात्रों को केवल किताबी ज्ञान देने के बजाय उन्हें ऐसे व्यावहारिक और पेशेवर कौशल सिखाना है जो उन्हें नौकरी, उद्यमिता या आत्मनिर्भर जीवन के लिए तैयार कर सके। कौशल आधारित शिक्षा एक ऐसी प्रणाली है जिसमें छात्रों को जीवनोपयोगी, तकनीकी, और पेशेवर कौशल सिखाए जाते हैं। यह शिक्षा प्रणाली छात्रों को 'क्या पढना है' से आगे बढक़र 'क्या करना है' पर केंद्रित करती है। इसका मूल उद्देश्य छात्रों को 'जॉब रेडी' बनाना और उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाना है। उदाहरण के लिए, पारंपरिक शिक्षा में छात्र केवल गणित के सूत्र रटते हैं, जबकि कौशल आधारित शिक्षा में उन्हें सिखाया जाता है कि उन सूत्रों का उपयोग व्यावसायिक या रोजमर्रा की समस्याओं को हल करने में कैसे किया जा सकता है। परंपरागत शिक्षा प्रणाली लंबे समय तक परीक्षा आधारित रही है, जिसमें छात्रों की योग्यता को उनके अंकों से आँका जाता रहा है। इसमें व्यावहारिक ज्ञान और सृजनात्मकता की अक्सर उपेक्षा की जाती रही है। इसकी प्रमुख सीमाएँ जैसे बच्चों को परीक्षा पास करने के लिए तथ्यों को याद करना सिखाया जाता है, न कि समझकर सीखना, छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं से निपटने का प्रशिक्षण नहीं मिलता, छात्रों को उनके रुचि और क्षमता के अनुसार करियर विकल्पों की जानकारी नहीं मिलती, डिग्री होने के बावजूद भी छात्र कई बार नौकरी के लिए आवश्यक व्यावसायिक और तकनीकी कौशल से वंचित रह जाते हैं। इन्हीं समस्याओं को हल करने के लिए कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत एक युवा देश है जहां 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम उम्र की है। परंतु, इस जनसंख्या को यदि सही दिशा नहीं मिली, तो वह 'डेमोग्राफिक डिविडेंड' के बजाय 'डेमोग्राफिक डिजास्टर' बन सकती है। वर्तमान में भारत में लाखों स्नातक हर वर्ष निकलते हैं, परंतु उनमें से एक बड़ी संख्या को रोजगार नहीं मिलता। इसका मुख्य कारण है - कौशल की कमी।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना जैसे कार्यक्रम इस चुनौती का समाधान करने की दिशा में कदम हैं। भारत को न केवल पढ़ा-लिखा बनाना है, बल्कि उसे कुशल भी बनाना है। आज जरूरत है प्रमुख कौशल कार्यक्रमों की जिन्हें शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए जैसे प्रोग्रामिंग, डिजिटल मार्केटिंग, डाटा एनालिटिक्स, हार्डवेयर और नेटवर्किंग, प्रभावी बोलचाल, लेखन और प्रस्तुतीकरण, छात्रों को रचनात्मक और तर्कसंगत तरीके से सोचने की ट्रेनिंग, समूह में काम करने और नेतृत्व करने की क्षमता विकसित करने, नवाचार, जोखिम प्रबंधन, व्यवसाय योजना निर्माण इत्यादि की। आधुनिक कार्यबल में बढ़ते बदलावों को समझते हुए, आज छात्र ऐसे अध्ययनों की तलाश में हैं जो ज्ञान के साथ-साथ ठोस परिणाम भी प्रदान करें। कौशल-निर्माण पर यह ध्यान छात्रों को अपनी सीखने की यात्रा के दौरान अधिक व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर देता है, जिससे वे आगे के कार्यबल के लिए तैयार होते हैं। कौशल-आधारित शिक्षण अभ्यास और अनुप्रयोग के माध्यम से ज्ञान का अर्जन है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से, छात्र अपने इच्छित क्षेत्रों में निपुणता की ओर बढ़ते हुए सक्रिय रूप से व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से, ट्रेड और व्यावसायिक स्कूलों में उन छात्रों के लिए कौशल-आधारित शिक्षण को प्राथमिकता दी जाती थी जो पारंपरिक शिक्षण पथों में निवेश किए बिना कार्यबल में शामिल होना चाहते थे। शिक्षा की बढ़ती लागत के साथ, गैर-पारंपरिक शिक्षण पथ अब अधिक अनुकूल हो गए हैं, जिससे छात्रों को लक्षित कौशल विकसित करने और कार्यबल में प्रवेश करने का अवसर मिलता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्रों को अपने निवेश का अधिकतम लाभ मिल रहा है, पारंपरिक संस्थान अब कौशल-आधारित शिक्षण को प्राथमिकता दे रहे हैं। इसलिए, छात्र न केवल शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करते हैं, बल्कि अपने अपेक्षित करियर में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल भी प्राप्त करते हैं। वर्षों से, ज्ञान-आधारित शिक्षण पारंपरिक शैक्षणिक संस्थानों में प्रयुक्त मानक दृष्टिकोण रहा है, जिसमें सूचना के प्रसारण, अक्सर पठन और व्याख्यानों के माध्यम से, के माध्यम से सीखने पर जोर दिया जाता है। कौशल-आधारित शिक्षण की तुलना में, ज्ञान-आधारित शिक्षण समझ पर केंद्रित होता है। ज्ञान-आधारित शिक्षण अभी भी सीखने का एक अनिवार्य घटक है और आगे भी रहेगा। आधुनिक दृष्टिकोण दोनों में संतुलन स्थापित करता है, पारंपरिक शिक्षण संस्थानों में कौशल-आधारित शिक्षण के महत्व पर प्रकाश डालता है। यद्यपि शिक्षण सामग्री की समझ शैक्षणिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन उन शिक्षाओं को लागू करने की क्षमता आज के कार्यस्थल के लिए महत्वपूर्ण है। कौशल-आधारित शिक्षा, कौशल-आधारित दुनिया के लिए एक समाधान है। छात्रों को ऐसे शिक्षण संस्थानों में शामिल होने के लिए अधिक प्रोत्साहित किया जाता है जो उन्हें कार्य की बदलती दुनिया के लिए तैयार करेंगे। हालांकि, कौशल-आधारित शिक्षा केवल परिणामों के बारे में नहीं है। सीखने की पूरी प्रक्रिया के दौरान, छात्र शैक्षणिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हो सकते हैं।

"Thriving in the Age of Competition: A Balanced Approach to Student Life"

In today's era of intense competition, student life is no longer limited to acquiring education alone. Along with knowledge, students must develop multifaceted skills, mental strength, time management, and adaptability to succeed. From school to higher education and career opportunities, the race to excel in exams, competitions, and technology has created both pressure and opportunities, demanding constant self-improvement.While competition can cause stress and comparison, healthy competition fosters discipline, hard work, and confidence, preparing students for global challenges. To thrive, students need clear goals, balanced routines, and stress-management practices like yoga, meditation, and hobbies, enabling them to achieve success while maintaining mental well-being and becoming capable, well-rounded citizens.

जॉब छोड़ने से पहले की तैयारी

नई कंपनी में नियुक्त होने पर जब आप वर्तमान कंपनी से त्यागपत्र देने जा रही हों तो थोड़ी-सी सावधानी आपको बड़े संकट से बचा सकती है।

1. जांचें कौन-से मिलेंगे लाभ...

निर्णय भली-भांति सोचकर लें। । देखें कि पुरानी नौकरी क्यों छोड़ रही हैं, क्या आप इससे कुछ बेहतर हासिल कर पा रही हैं, जैसे- कार्यालय घर के नज्जदीक है, वेतन अधिक है, काम आपकी पसंद का है इत्यादि क्योंकि बिना पुख्ता कारण समझे कोई फैसला लेंगी तो आगे चलकर निराश हो सकती हैं। इसलिए हर तरह से नए वातावरण में ढलने के लिए तैयार रहें।

2. त्यागपत्र से पहले लें नियुक्ति पत्र...

किसी भी समस्या से बचने के लिए पहले ही नियुक्ति पत्र प्राप्त करें, उसकी शर्तों को पढ़कर समझ लें। अपनी स्वीकृति भेजें और उसकी पावती यानी एक्नॉलेजमेंट प्राप्त करें। उसके बाद त्यागपत्र प्रेषित करें।

3 नई कंपनी के नियम व शर्तें समझे

नई नौकरी चुनने से पहले उसके नियम व शर्तें जांचें। जैसे- कर्मचारी दर्जा, स्थानांतरण, पदोन्नति, विदेश यात्रा, पोस्टिंग या बॉण्ड इत्यादि।

4. वर्तमान कंपनी की शर्तें जांचें

सीता को नई कंपनी से जॉब ऑफर मिलने के बाद वहां के नियम व शर्तें पढ़ीं और उसे सही पाकर तुरंत उसके लिए स्वीकृति दे दी। इस चक्कर में वह ये भूल गई कि वर्तमान कंपनी में नियोक्ता को कम से कम तीन माह का नोटिस देना सेवा शर्तों में उल्लिखित था जिसकी वजह से उसे दो माह की वेतन राशि चुकानी पड़ी। इसलिए आप भी ये ग़लती ना करें।

5 नौकरी छोड़ें पर रिश्ते नहीं

त्यागपत्र सौंपने पर होने वाले सवाल-जवाब हेतु तैयार रहें। झूठ बोलने से बचें, क्योंकि एक झूठ के चक्कर में कई झूठ बोलने पड़ते हैं। संबंध ख़राब करके नौकरी न छोड़ें, समस्या बताकर ही अपना त्याग-पत्र दें।

6. वित्तीय योजना बनाएं

- अपनी वित्तीय स्थिति की समीक्षा करें।
- आपातकालीन फंड तैयार रखें जो कम से कम 3-6 महीने के खर्च को कवर कर सके।

7. नई नौकरी की खोज-

- नई नौकरी की तलाश शुरू करें।
- रिज़्यूमे और कवर लेटर को अपडेट करें।
- नेटवर्किंग करें और जॉब पोर्टल्स पर सक्रिय रहें।

8. कंपनी की नीतियों की समीक्षा करें

- कंपनी की जॉब छोड़ने की नीतियों को समझें।
- नोटिस पीरियड की जानकारी लें और उसका पालन करें।

9. प्रोफेशनल कम्युनिकेशन

- अपने मैनेजर को पेशेवर और सम्मान पूर्वक तरीके से अपनी इस्तीफे की सूचना दें।
- इस्तीफे का पत्र लिखें जिसमें आप अपने छोड़ने के कारण और आखिरी कामकाजी दिन का उल्लेख करें।

10. ट्रांजिशन प्लान

- अपने काम और परियोजनाओं का विवरण तैयार करें।
- अपनी जिम्मेदारियों को ट्रांसफर करने के लिए ट्रांजिशन प्लान बनाएं।
- अपने रिप्लेसमेंट को ट्रेनिंग देने में मदद करें।

11. संपत्ति और दस्तावेज़

- कंपनी की संपत्ति (लैपटॉप, आईडी कार्ड, आदि) को वापस करने की योजना बनाएं।
- आवश्यक दस्तावेज़ों और व्यक्तिगत फाइलों का बैकअप लें, बशर्ते वे कंपनी की नीतियों के अनुसार हो।

12. पेशेवर संबंध बनाए रखें

- अपने सहकर्मियों और मैनेजर के साथ अच्छे संबंध बनाए रखें।
- अपने पेशेवर नेटवर्क को बनाए रखें और लिंक्डइन पर कनेक्टेड रहें।

13. आत्ममूल्यांकन

- अपनी वर्तमान भूमिका से सीखे गए कौशल और अनुभव का मूल्यांकन करें।
- अपने भविष्य के करियर लक्ष्यों को स्पष्ट करें और उन्हें प्राप्त करने के लिए योजना बनाएं।

इन कदमों को उठाने से आप जॉब छोड़ने की प्रक्रिया को सुचारू और पेशेवर बना सकते हैं।

करियर या हर्डल रेस

वर्किंग विमिन की कुछ समस्याएं ऐसी होती हैं, जिन्हें आम माना जा सकता है। तकरीबन सभी कामकाजी महिलाओं को उन चुनौतियों से रू-ब-रू होना पड़ता है। मगर कुछ समस्याएं उनकी ऐसी भी होती है, जो सबके खाते में नहीं आतीं। अमेरिका की डिजिटल एक्सपीरियंस कंसल्टेंसी फर्म बाउंटियस की ट ेक न ो ल ॉ ज ी एनालिस्ट कायत्री करुप्पसामी की खासियत यह है कि वह इन दोनों ही तरह की चुनौतियों से जूझकर करियर की ऊंचाई पर पहुंची है।

उनके करियर को पहला झटका 2014 में लगा, जब पति के साथ च शिफ्ट होने के लिए उन्हें ॥ष्टरु इन्द्रष्ठ में सॉफ्टवेयर इंजीनियर की जॉब छोड़नी पड़ी। वहां दो साल की तलाश के बाद काम मिला, मगर एक साल बाद ही उन्होंने एक बच्ची को जन्म दिया और काम छोड़ना पड़ गया। यह दूसरा झटका था करियर को। साल बाद अचानक उनके पति की मौत हो गई। इस त्रासदी ने जैसे सब कुछ उलट पलट दिया। वह बेटी को लेकर अपने देश लौट आई। अब नए सिरे से काम की तलाश शुरू हुई। शुरू में सोचा कि लाइसेंस टेस्टिंग वाला काम ही देखा जाए, जो वह च में कर रही के घंटों का मसला था। के बेटी की देखभाल करनी थी, लिहाजा देर तक काम नहीं कर सकती थीं। थीं। लेकिन उसमें काम दूसरा विकल्प था मेनफ्रेम डेवलपर का, जो वह च शिफ्ट होने से पहले कर रही थीं। मगर यहां मार्केट में उस वक्त ओपनिंग नहीं थी। इन बाधाओं के बीच भी अनुभव और हुनर के आधार पर उन्होंने पांच अलग-अलग कंपनियों में अर्जी दी। हर जगह टेक्निकल इंटरव्यू राउंड क्लीयर हो गया, लेकिन करियर में गैप के चलते पांचों जगह रिजेक्ट हो गईं। उसी दौरान उनका ध्यान बाउंटियस के रिटर्न टु वर्क प्रोग्राम की ओर गया। यहां बात बन गई। कंपनी ने उनके स्किल और सात साल के एक्सपीरिएंस को तवज्जो दी, गैप को इशू नहीं बनाया। आज कायत्री की काबिलियत न सिर्फ उनके बल्कि कंपनी और इंडस्ट्री के भी काम आ रही है।

इंटरव्यू के लिए कुछ महत्वपूर्ण टिप्स

तैयारी करें

- कंपनी के बारे में शोध करें।
- जॉब विवरण को ध्यान से पढ़ें और आवश्यक कौशलों को समझें।
- संभावित प्रश्नों का अभ्यास करें और उनके उत्तर तैयार करें।

प्रस्तुति

- इंटरव्यू के दिन समय पर पहुँचें।
- उचित ड्रेस कोड का पालन करें और पेशेवर दिखें।

बॉडी लैंग्वेज

- आत्मविश्वास दिखाएँ।
- आँखों में आँखें डालकर बात करें।
- अपने हाथों और चेहरे के भावों को नियंत्रित रखें।

संवाद कौशल

- स्पष्ट और प्रभावी ढंग से बोलें।
- संक्षिप्त और सटीक उत्तर दें।
- सवालों को ध्यान से सुनें और समझें।

प्रश्न पूछें

- इंटरव्यू के अंत में कंपनी और भूमिका के बारे में कुछ प्रश्न पूछें।
- यह आपके उत्साह और गंभीरता को दर्शाता है।

आभार व्यक्त करें

- इंटरव्यू के बाद एक धन्यवाद ईमेल भेजें।
- इस ईमेल में इंटरव्यू के लिए धन्यवाद कहें और अपनी रुचि को फिर से व्यक्त करें।

सकारात्मक दृष्टिकोण

- हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखें।
- अपने पिछले अनुभवों और सफलताओं को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करें।

इन टिप्स का पालन करने से इंटरव्यू में सफलता प्राप्त करने की संभावना बढ़ जाती है।

इंटरव्यू में परिधान का रखें ध्यान

अगर आप इंटरव्यू के लिए जा रही अ हैं तो फेशन से जुड़ी कुछ ग़लतियों से बचें। उस दौरान आपको क्या पहनना चाहिए और क्या नहीं, आइए जानते हैं।

सलवार सूट या कुर्ती...

अगर आप इंटरव्यू के लिए कुर्ती या सलवार सूट पहन रही हैं तो बड़े और गोल गले पहनने से बचें। बोट या वी नेक पहनना उचित है।

शर्ट

जब शर्ट पहनें तो ऊपर के बटन दो से अधिक ना खुले हों इसका ध्यान रखें। साथ ही शर्ट की बटन्स के बीच का हिस्सा खिंचे नहीं यानी कि उसमें गैप ना बन रहा हो इसका भी ख़याल रखें।

ट्राउजर या स्कट...

शर्ट और ट्राउजर में बेल्ट लगाना ना पहनते वक़्त भी बेल्ट जरूर लगाएं। भूलें। स्कर्ट पहनते वक्त भी बेल्ट जरूर लगाएं।

नाखून की सफ़ाई...

आपके नाखून बिलकुल साफ़ और कटे होने चाहिए। एक्सटेंशन और नेलआर्ट आपकी छवि बिगाड़ सकते हैं।

एक्सेसरीज...

अधिक एक्सेसरीज पहनने से बचें। बहुत सारी अंगूठियां, ब्रेसलेट और गले में चेन न पहनें। साथ ही डिजिटल घड़ी पहनने के बजाय सामान्य यानी एनालॉग घड़ी ही पहनें। ऐसी कोई एक्सेसरीज ना पहनें जो आवाज करती हो, जैसे पायल या चूड़ियां।

हेयर स्टाइल...

बालों को खोलकर रखेंगी तो ये बिखरे-बिखरे नजर आएंगे। गर्मी के कारण ये चिपचिपे भी हो सकते हैं। इसलिए चोटी बांधें या फिर जूड़ा बना लें। इससे आपके बाल सधे रहेंगे।

सैंडल या शूज...

आपकी सैंडल या जूते आवाज ना करें इसका ध्यान रखें। इसके अलावा बहुत चटख और चमकीली सैंडल पहनने से भी बचें।

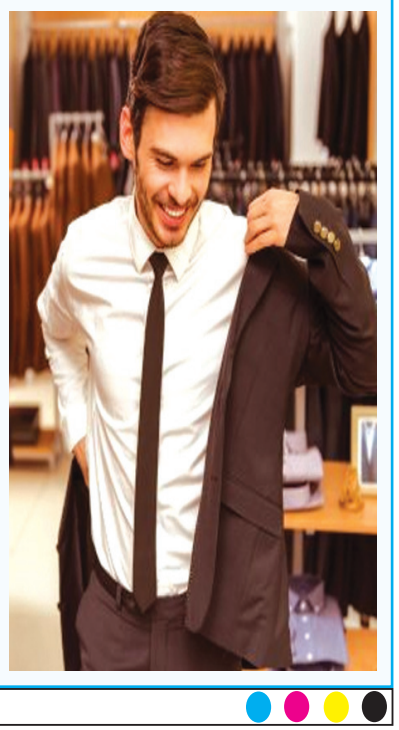

Teenage Hygiene and Menstrual Health: Building Healthy Habits for Life

Teenage years are a time of rapid physical, emotional, and psychological transformation. As adolescents transition from childhood to adulthood, their bodies undergo significant changes, including the onset of puberty. Among these changes, menstruation marks a key milestone in a teenage girl's life. During this sensitive phase, maintaining proper hygiene becomes not only essential for physical health but also for emotional well-being and self-confidence.

Menstrual Hygiene: Breaking the Silence

Menstruation is a natural biological process, yet many teenage girls face stigma, misinformation, and lack of awareness about how to manage it hygienically and confidently.

Essential Menstrual Hygiene Tips:

Use Safe Menstrual Products: Choose sanitary pads, tampons, or menstrual cups based on comfort. These should be changed every 4–6 hours to prevent odor and infection.

Wash the Genital Area with Clean Water: Do not use harsh soaps or chemicals. Simply rinse with water from front to back to prevent bacteria from spreading.

Dispose of Sanitary Products Properly: Wrap used pads or tampons in paper before discarding them in a dustbin. Do not flush them in toilets.

Wear Comfortable Clothing: Cotton underwear and loose clothes during menstruation help maintain comfort and airflow, reducing the risk of irritation.

Track the Menstrual Cycle: Keeping a record of the cycle helps identify irregularities and maintain preparedness.

Challenges and Myths Around Menstruation

In many cultures, menstruation is still surrounded by taboos and misconceptions. This leads to shame, isolation, and poor hygiene practices among teenage girls. It is vital to promote open discussions at home and in schools to empower girls with accurate knowledge.

The Role of Parents, Teachers, and Society

Educate Early: Both boys and girls should be educated about puberty and menstrual hygiene to build a supportive environment.

Encourage Open Dialogue: Girls should feel safe discussing their concerns without judgment or embarrassment.

Ensure Access to Hygiene Products: Schools and communities must make sanitary products accessible and affordable to all.

Teenage hygiene, especially during menstruation, is not just about staying clean — it's about staying healthy, confident, and informed. Good hygiene practices established during adolescence lay the foundation for a healthier adulthood. Let us work together to create an environment where every teenager, especially girls, can embrace their changing bodies with pride and dignity.

A healthy teen today leads to a healthier tomorrow.

Why is Hygiene Important in Teenage Years?

1. Hormonal Changes: Puberty causes increased oil secretion, sweating, and growth of body hair. Without proper hygiene, teenagers may face issues such as body odor, acne, and infections.

2. Increased Risk of Infections: Teenagers are more vulnerable to skin infections, dental problems, and reproductive tract infections due to changes in body chemistry and lifestyle habits.

3. Mental and Social Impact: Cleanliness enhances self-esteem. A teenager who maintains good hygiene often feels more confident in social interactions and performs better academically and emotionally.

Key Hygiene Practices for Teenagers

Daily Bathing: Regular showers help remove sweat, dirt, and bacteria. Using mild soap and warm water is recommended, especially during menstruation.

Oral Hygiene: Brushing teeth twice a day and flossing keeps the mouth clean and prevents bad breath, cavities, and gum problems.

Clean Clothing: Wearing clean and breathable clothes, especially undergarments, is crucial. Clothes soaked in sweat should be changed promptly to avoid bacterial growth.

Hair and Skin Care: Washing hair regularly and using a gentle face cleanser helps control oiliness, dandruff, and acne.

Hand and Nail Hygiene: Washing hands before eating and after using the toilet prevents the spread of germs. Nails should be trimmed regularly.

Outstanding Performance of Adarsh Mahila Mahavidyalaya Cadets in NCC ATC-148 Camp

A 10-day NCC Annual Training Camp (ATC-148) was organized by the 2 HR Girls Battalion NCC, Rohtak at SRS College, Rohtak from 26th June to 5th July 2025. Sixty cadets from Adarsh Mahila Mahavidyalaya, Bhiwani enthusiastically participated in the camp, which provided them with comprehensive training focused on discipline, leadership, and personality development. During the camp, the cadets engaged in various competitive and co-curricular activities alongside teams from institutions such as 9 CW Rohtak, GCW Sapala, MKJK Rohtak, BHU College, MDU Rohtak, and Hindu College. Our cadets displayed commendable performance and secured several positions across multiple categories.

In group activities, the cadets of Adarsh Mahila Mahavidyalaya achieved 3rd position in the Group Song competition, while also delivering a strong performance in the drill competition. In the individual category, Cadet Nandini secured 1st position in Extempore and also excelled in the Quiz competition. Cadet Tannu earned 3rd position in Extempore and secured 1st position in Public Speaking. LCPL Payal won 1st position in Poster Making, and along with Nandini, performed notably in the Quiz. Senior Under Officer Supriya was awarded for being the Best Company Senior, while Cadet Nikita Sharma was recognized as the Best Health and Hygiene Incharge. Additionally, UO Saloni and Sgt. Himanshi performed commendably in RF Duty.

At the conclusion of the camp, co-founder Mr. Amit Mathew congratulated the cadets on their exceptional achievements and extended his best wishes for their future endeavors. The participation and accomplishments of the cadets at this camp reflect their dedication, discipline, and commitment to excellence, bringing pride to the institution.

कारगिल विजय दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में किया पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित

महाविद्यालय के प्रांगण में कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में एन.सी.सी इकाई द्वारा एक विशेष पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के कुशल दिशा-निर्देशन में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के दौरान सी.टी.ओ. डॉ. रिंकू अग्रवाल ने छात्राओं को संबोधित करते हुए पर्यावरण संरक्षण में पौधरोपण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने छात्राओं को प्रकृति के प्रति जागरूक रहते हुए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने का संदेश दिया।

इस अवसर पर डॉ. रुचि वत्स एवं नेहा ने भी कार्यक्रम की सफलता में सक्रिय योगदान दिया। साथ ही, एन.सी.सी कैडेट्स की भागीदारी अत्यंत सराहनीय रही, जिन्होंने पूरे उत्साह एवं अनुशासन के साथ पौधा रोपण में हिस्सा लिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल कारगिल के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करना था, बल्कि पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का भाव भी जागृत करना रहा।

सैन्य अस्पताल हिसार में आयोजित विशेष एनसीसी प्रशिक्षण शिविर में किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

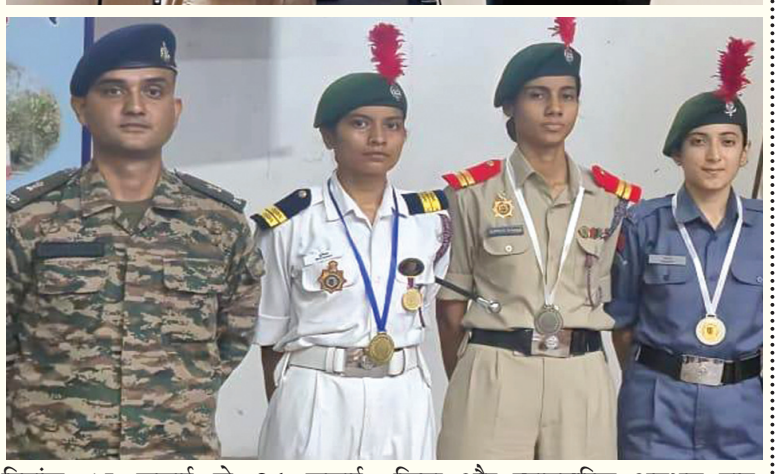

दिनांक 15 जुलाई से 24 जुलाई 2025 तक हिसार स्थित सैन्य अस्पताल में आयोजित विशेष एनसीसी प्रशिक्षण शिविर में आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी की दो कैडेट्स – एस.यू.ओ. सुप्रिया एवं सार्जेंट हिमांशी ने भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। यह प्रशिक्षण शिविर IHR, R&V, SQN, NCC हिसार द्वारा आयोजित किया गया था, जिसमें चयनित कैडेट्स को प्राथमिक चिकित्सा, अस्पताल प्रबंधन तथा स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के दौरान कैडेट्स ने सैन्य अस्पताल का भ्रमण कर जच्चा-बच्चा वार्ड, ओ.पी.डी., कोल्ड स्टोरेज तथा फिजियोथेरेपी विभाग का अवलोकन किया और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। इस दौरान कैडेट्स ने न केवल अपने चिकित्सीय ज्ञान को बढ़ाया, बल्कि आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता का भी विकास किया। शिविर में आयोजित ड्रिल प्रतियोगिता में एस.यू.ओ. सुप्रिया ने प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया। उनके इस अनुकरणीय प्रदर्शन के लिए बटालियन के मेजर अनुराग शर्मा ने उन्हें मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया और आगे जीवन में निरंतर प्रगति की प्रेरणा दी। यह उपलब्धि न केवल एनसीसी की गुणवत्ता को दर्शाती है, बल्कि महाविद्यालय की छात्राओं की लगन, अनुशासन और सेवा भाव का भी परिचायक है।

भक्तिभाव से मनाया जाने वाला पर्व गोगा नवमी

गोगा नवमी, जिसे गोगा नौमी या गोगा जी महाराज की नवमी भी कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण धार्मिक पर्व है जो भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को मनाया जाता है। यह दिन विशेष रूप से उत्तर भारत के हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और मध्यप्रदेश में श्रद्धा और भक्ति से मनाया जाता है।

गोगा जी महाराज कौन थे?

गोगा जी महाराज को %जाहर वीर% के नाम से भी जाना जाता है। वे एक महान योद्धा और नागों के देवता माने जाते हैं। उनकी कथाओं के अनुसार, वे सांपों से रक्षा करने वाले और संकटों से मुक्ति दिलाने वाले थे। लोक मान्यताओं में वे गुरु गोरखनाथ के शिष्य माने जाते हैं। गोगा जी का जन्म राजस्थान के ददरेवा गांव में चौहान वंश में हुआ था। उन्होंने अपनी वीरता, धर्मपरायणता और लोक कल्याण के कार्यों के कारण अमरत्व प्राप्त किया। माना जाता है कि वे आज भी लोकों की सहायता करते हैं।

गोगा नवमी का महत्व

1. **सर्पदंश से रक्षा:** ग्रामीण क्षेत्रों में यह विश्वास है कि जो व्यक्ति गोगा नवमी पर व्रत रखता है या गोगा जी की पूजा करता है, उसे सर्पदंश का भय नहीं रहता।
2. **लोक आस्था और भक्ति:** यह पर्व लोक श्रद्धा का प्रतीक है। गोगा जी को श्रद्धालु पीले घोड़े पर सवार नागों के देवता के रूप में पूजते हैं।
3. **धार्मिक एकता का प्रतीक:** यह पर्व हिंदू और मुसलमान दोनों समुदायों द्वारा श्रद्धा से मनाया जाता है, जो गोगा जी को संत या पीर के रूप में पूजते हैं।

पूजा विधि और परंपराएं

गोगा जी की छवि या मूर्ति की स्थापना की जाती है।

महिलाएं और पुरुष पीले वस्त्र पहनकर भजन-कीर्तन करते हैं।

'गोगा जी का ध्वजा' घरों में लगाया जाता है।

मिट्टी से बने गोगा जी के निशान बनाकर पूजा की जाती है।

गेहूं, जौ, और दूध से विशेष भोग अर्पित किया जाता है।

बच्चे घर-घर जाकर ÷गोगा जी÷ के गीत गाते हैं और अनाज एकत्र करते हैं।

आधुनिक युग में गोगा नवमी का संदेश

आज के तकनीकी और वैज्ञानिक युग में भी गोगा नवमी जैसे पर्व हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने का माध्यम हैं। यह पर्व न केवल हमारी धार्मिक मान्यताओं को जीवित रखता है, बल्कि प्रकृति, जीव-जंतुओं और मानवता के प्रति सम्मान की भावना को भी मजबूत करता है।

उपसंहार: गोगा नवमी एक ऐसा पर्व है जो लोक संस्कृति, भक्ति, परंपरा और सामाजिक समरसता का सुंदर संगम है। गोगा जी महाराज की पूजा न केवल आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह हमें सिखाता है कि हमें हर जीव, चाहे वह मानव हो या पशु, सबके प्रति करुणा और संवेदना रखनी चाहिए।

जय हो गोगा वीर की, संकट हरो पीर की!

आधुनिकता में रक्षाबंधन

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख और भावनात्मक त्योहार है, जो भाई-बहन के पवित्र संबंध को समर्पित है। यह त्योहार हर वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधकर उसके लंबी उम्र और सुखद जीवन की कामना करती है, और भाई जीवन भर उसकी रक्षा का वचन देता है।

आधुनिक युग में रक्षाबंधन की प्रासंगिकता

आज के समय में जब समाज तीव्र गति से बदल रहा है, पारिवारिक ढांचे में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है, और तकनीकी प्रगति ने मानवीय रिश्तों को कहीं न कहीं दूर कर दिया है। ऐसे में रक्षाबंधन का महत्व और भी बढ़ जाता है।

रिश्तों को जोड़े रखने का माध्यम

रक्षाबंधन भाई-बहन के रिश्ते को मजबूती देने का एक सशक्त माध्यम है। यह पर्व उन लोगों को भी जोड़ता है जो दूर-दराज में रहते हैं। सोशल मीडिया, ऑनलाइन गिफ्ट्स और डिजिटल राखियों के माध्यम से यह त्योहार अब भौगोलिक सीमाओं को पार कर जुड़ाव का प्रतीक बन गया है।

समानता और सशक्तिकरण का संदेश

आधुनिक समाज में रक्षाबंधन केवल भाई द्वारा बहन की रक्षा तक सीमित नहीं रहा। अब बहनें भी भाइयों की सुरक्षा और खुशहाली की कामना करती हैं। कई जगहों पर बहनें अपने बहनों या दोस्तों को भी राखी बांधती हैं, जिससे यह त्योहार लिंग समानता और समावेशिता का संदेश भी देने लगा है।

संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण

विकसित होते समाज में जब युवा पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं, ऐसे समय में रक्षाबंधन जैसे त्योहार हमारी जड़ों से जुड़ने का एक अवसर प्रदान करते हैं। यह त्योहार नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति, संस्कारों और पारिवारिक मूल्यों से परिचित कराता है।

भावनात्मक एकता और सद्भाव

रक्षाबंधन केवल व्यक्तिगत रिश्तों तक सीमित नहीं है, यह सामाजिक एकता और सौहार्द का भी प्रतीक है। कई स्थानों पर लोग सैनिकों, डॉक्टरों, पुलिसकर्मियों आदि को भी राखी बाँधकर उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। यह दर्शाता है कि रक्षा का अर्थ केवल शारीरिक सुरक्षा नहीं, बल्कि भावनात्मक समर्थन और विश्वास भी है। रक्षाबंधन का मूल उद्देश्य भाई-बहन के रिश्ते को प्रेम, विश्वास और कर्तव्य के धागे से बाँधना है। आधुनिकता ने भले ही जीवन की गति को तेज कर दिया हो, पर इस पर्व ने अपने भावनात्मक और सांस्कृतिक महत्व को आज भी बनाए रखा है। यह त्यौहार हमें याद दिलाता है कि चाहे समय कितना भी बदल जाए, रिश्तो की डोर हमेशा मजबूत रहनी चाहिए।

कृष्ण जन्माष्टमी: भक्ति भाव और सांस्कृतिक चेतना का पर्व

कृष्ण जन्माष्टमी हिन्दू धर्म का एक अत्यंत पावन और महत्वपूर्ण त्योहार है, जो भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व भाद्रपद मास की अष्टमी तिथि को रात्रि में मनाया जाता है, क्योंकि श्रीकृष्ण का जन्म आधी रात को हुआ था। यह दिन न केवल धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, दर्शन और मानव मूल्यों की गहराई को भी दर्शाता है।

भगवान श्रीकृष्ण का जीवन और शिक्षा

भगवान श्रीकृष्ण को विष्णु के आठवें अवतार के रूप में पूजा जाता है। उनका जन्म मथुरा में कंस के कारागार में हुआ था। बाल्यकाल गोकुल और वृंदावन में बीता जहाँ उन्होंने माखन चोरी, रासलीला और गोवर्धन पूजा जैसे अनेक लीलाएं कीं। उन्होंने अर्जुन को गीता का उपदेश देकर जीवन की दिशा और धर्म का गूढ़ ज्ञान दिया। श्रीकृष्ण का जीवन संदेश देता है कि धर्म की रक्षा के लिए अधर्म का नाश आवश्यक है और सत्य के मार्ग पर चलकर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है।

जन्माष्टमी का धार्मिक महत्व

जन्माष्टमी के दिन व्रत, भजन-कीर्तन, झांकियां, रासलीला, और मटकी फोड़ जैसे आयोजनों के माध्यम से श्रद्धालु भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाते हैं। मंदिरों को भव्य रूप से सजाया जाता है और रात के ठीक 12 बजे श्रीकृष्ण की प्रतिमा का विशेष पूजन और अभिषेक होता है। इस दिन उपवास रखने और रात्रि जागरण करने का विशेष महत्व है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन व्रत करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

आधुनिक युग में जन्माष्टमी का महत्व

वर्तमान समय में जहाँ भौतिकता और प्रतिस्पर्धा ने मानव मूल्यों को क्षीण किया है, श्रीकृष्ण का जीवन मार्गदर्शक बन सकता है। उनका संदेश - ÷कर्म करो, फल की चिंता मत करो÷, आज भी उतना ही प्रासंगिक है। जन्माष्टमी एक ऐसा पर्व है जो हमें भक्ति, सेवा, कर्तव्य और प्रेम का महत्व समझाता है।

संस्कृति और उत्सव का संगम

जन्माष्टमी न केवल धार्मिक उत्सव है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक एकता और उत्सवधर्मिता का प्रतीक भी है। विभिन्न राज्यों में यह पर्व अपनी विशिष्ट परंपराओं और शैली में मनाया जाता है - कहीं झूलों और झांकियों के रूप में, तो कहीं 'दही-हांडी' जैसे आयोजनों के रूप में। कृष्ण जन्माष्टमी केवल भगवान श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव नहीं है, यह उनके आदर्शों, शिक्षाओं और लीलाओं को जीवन में आत्मसात करने का भी अवसर है। यह पर्व हमें सिखाता है कि प्रेम, करुणा, और धर्म के पथ पर चलकर ही जीवन को सफल और समर्पित बनाया जा सकता है।

श्री गणेश जी की महिमा, परंपरा और आधुनिक समाज में महत्व

गणेश चतुर्थी हिन्दू धर्म का एक प्रमुख पर्व है, जिसे भगवान गणेश के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व भाद्रपद माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। इसे विनायक चतुर्थी या गणपति उत्सव के नाम से भी जाना जाता है।

गणेश जी को सिद्धि-विनायक, विघ्नहर्ता और मंगलकर्ता के रूप में पूजा जाता है। वे बुद्धि, विवेक, सौभाग्य और समृद्धि के देवता हैं।

गणेश चतुर्थी का पौराणिक महत्व

पुराणों के अनुसार, गणेश जी का जन्म माता पार्वती ने अपने शरीर के उबटन से किया था। जब शिवजी ने उन्हें अज्ञात समझकर उनका सिर काट दिया, तब पार्वती के रोष को शांत करने हेतु उन्होंने हाथी का सिर लगाकर गणेश को पुनर्जीवित किया।

भगवान गणेश को प्रथम पूय देवता का दर्जा मिला – श्री गणेशाय नमः' से हर कार्य का आरंभ होता है।

गणेश चतुर्थी की परंपराएं

प्रतिमा स्थापना: घरों, मंदिरों और पंडालों में गणेश जी की सुंदर मूर्तियां स्थापित की जाती हैं।

पूजा और आरती: गणपति जी की विधिवत पूजा, 10 दिनों तक आरती, भजन और मंत्रों के साथ की जाती है।

प्रसाद: विशेष रूप से मोदक, लड्डू, दूर्वा घास, और सिंदूर का प्रयोग पूजा में किया जाता है।

विसर्जन: अनंत चतुर्दशी को भक्त धूमधाम से 'गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ' के जयकारों के साथ मूर्ति विसर्जित करते हैं।

आधुनिक युग में गणेश चतुर्थी का सामाजिक स्वरूप

एकता और सामूहिकता का प्रतीक: यह पर्व विभिन्न जातियों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने का कार्य करता है।

पर्यावरण जागरूकता का अवसर: अब कई स्थानों पर इको-फ्रेंडली गणेश प्रतिमाएं बनाई जा रही हैं ताकि नदियों और जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाया जा सके।

संस्कृति और कला का संगम: नृत्य, संगीत, रंगोली, नाट्य आदि के माध्यम से भारतीय कला को बढ़ावा मिलता है।

बचों में संस्कारों की शिक्षा :इस पर्व के माध्यम से बचों को धर्म, शिष्टाचार और सामूहिकता की भावना सिखाई जाती है।

गणेश जी से जीवन के लिए प्रेरणा

गणेश जी का रूप भी हमें बहुत कुछ सिखाता है:-

बड़ा मस्तक: सोच को विशाल बनाएं
छोटे नेत्र: गहराई से देखें
बड़े कान: सबकी सुनें

छोटी आँखें और बड़ा पेट: एकाग्र रहें और सब कुछ सहन करें गणेश चतुर्थी न केवल एक धार्मिक पर्व है, बल्कि यह संस्कार, संस्कृति, सामाजिक समरसता और आस्था का उत्सव भी है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि जीवन में विघ्न जरूर आएंगे, परंतु यदि हम संकल्प, बुद्धि और विवेक से काम लें, तो हर विघ्न दूर हो सकता है।

....गणपति बप्पा मोरया! मंगल मूर्ति मोरया।

Adarsh Mahila Mahavidyalaya, Bhiwani

A Prestigious "Multi-disciplinary" Institution for Quality Education for Women, "Best College" declared by Govt. of Haryana, AICTE Approved
Recognised by UGC Under Section 2 (f) & 12 (B) Affiliated to Chaudhary Bansi Lal University, Bhiwani

NAAC Accredited B+, ISO : 9001 Certified

अब आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी से कीजिए

डिप्लोमा कोर्स

गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी, हिसार द्वारा

डिस्टेंस एजुकेशन

- COMPUTER APPLICATION
- DATA SCIENCE
- ARTIFICIAL INTELLIGENCE
- CYBER SECURITY

Qualification : 10+2 pass in any discipline

- BUSINESS ANALYTICS
- SUPPLY CHAIN ANALYTICS
- FINANCIAL MARKET
- BANKING & FINANCE

ANY ENQUIRY CALL US

+91 930-694-0790

Qualification : Graduate with at least 50% marks (47.5% for SC category of Haryana) from a recognized board/ university

dev.ammb.ac.in principalammb@gmail.com

अनुपमा यात्रा

स्वामित्व, मुद्रक एंव प्रकाशक आदर्श महिला महाविद्यालय भिवानी द्वारा दैनिक भास्कर गोहाना रोड़, सुखपुरा रोहतक से मुद्रित करवाकर आदर्श महिला महाविद्यालय, हांसी गेट भिवानी-127021 से प्रकाशित किया जाता है। Title-Code:- HARBIL01906 **प्रबंध सम्पादक:** डॉ. अलका मित्तल **कार्यकारी सम्पादक :** डॉ. गायत्री बंसल **मोबाईल नम्बर:** 9306940790 **नोट:** सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भिवानी न्यायालय होगा **Gmail:** anupama.express@ammb.ac.in